'ग्रेप' की नौटंकी से बढ़ता जा रहा है वायु प्रदूषण

फरीदाबाद (म.मो.) सांस लेने के लिये शुद्ध वायु प्रत्येक नागरिक का मौलिक अधिकार है। इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है जब इससे भी नागरिक वंचित रह जायें? इसके लिये सरकार पूर्णतया दोषी होने के बावजूद सारा दोष नागरिकों के सिर मढ़ने के साथ-साथ तरह-तरह की नौटंकियों के द्वारा यह बताना चाहती है कि वह पूरी गम्भीरता से इस समस्या का समाधान करने में जुटी है। इसके लिये प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड व एनजीटी जैसे ड्रामे रच दिये हैं।

इसी श्रृंखला में बीते तीन साल से 'ग्रेप' के नाम से एक नया पाखंड भी खड़ा कर दिया है। पाखंड इस लिये कि इन सब का कोई असर वायु प्रदूषण पर नजर नहीं आ रहा है। यह दिन-ब-दिन बढ़ता हुआ प्रतीत होता है। पुराने अनुभवों के आधार पर, ज्यों ही सर्दी का आगमन होता है, प्रदूषण बढ़ने लगता है। इसे रोकने के लिये 'ग्रेप' प्रणाली का नया शगूफा पेश किया गया है। इस प्रणाली के अनुसार नगर निगम 'हूडा', प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड पीडब्लूडी, एनएचएआई, स्वास्थ्य विभाग, बिजली विभाग यहां तक कि पुलिस विभाग तक सभी को इसमें जोड़ा गया है। यानी कि ये सभी विभाग मिलकर प्रदूषण रोकन का काम करेंगे। लेकिन इसके बावजूद परिणाम निल बटा सन्नाटा।

सरकार को सैंकड़ों किलोमीटर से आने वाला पराली का तथाकथित धुंआ तो नज़र आता है लेकिन शहर की टूटी सड़कों से लगातार उठने वाले धूल के गुबार व जगह-जगह जलते कुड़े के ढेर नजर नहीं आते। इस धूल को दबाने के नाम पर पानी छिड़काव के भारी-भरकम बिल तो बनाये जा सकते हैं लेकिन सड़कें ठीक नहीं की जा सकती। बीते सप्ताह सेक्टर 14,15,16,17 आदि सड़कों की मुरम्मत के नाम पर गड्ढों में मिट्टी भर दी जिससे धूल के गुबार उठना स्वाभाविक है। यातायात की लचर व्यवस्था के चलते सड़कों पर लगने वाले जाम से भी होने वाला प्रदूषण सरकार को नजर नहीं आता।

जनरेटर सेटों पर पाबंदी लगाने की बजाय सरकार बिजली की आबाध आपूर्ति की जिम्मेवारी क्यों नहीं लेती? सर्वविदित है कि कोई भी व्यक्ति जनरेटर अपनी खुशी से नहीं बल्कि मजबूरीवश चलाता है। उसी मजबूर व्यक्ति पर सरकार के ये महकमे प्रदूषण नियंत्रण के नाम पर सवार हो जाते हैं, बिजली विभाग को कोई नहीं पूछता।

अभी क्या है, असली वायु प्रदूषण तो दीवाली की रात को दिखेगा, जब हिन्दुत्व के नाम पर जिला मैजिस्ट्रेट के आदेशों की धज्जियां उड़ाते हुए पूरा वातावरण बारूदी दुर्गन्धयुक्त धुंए से भर जायेगा। कानफोड़ू धमाकों का शोर तो होगा ही। तमाम आदेशों के उल्लंघना करते हुए यह खेल पूरी रात चलता रहेगा और जिला प्रशासन मूक तमाशाई बने रहने के अलावा कुछ भी नहीं कर पायेगा।

पुलिस चौकी डीएलएफ सेक्टर 11: मुकदमा दर्ज करना तो दूर, दरखास्त की रसीद मांगने पर गालियां मिली

फरीदाबाद (म.मो.) दिनांक 12 अक्टूबर को सड़क पर मज़दूरी करने वाले सात-आठ परिवार अपने साथ हुई चोरी की एक वारदात दर्ज कराने सेक्टर 11 की चौकी में गये तो धमकियां खाकर वापस लौट आये।

नगर निगम द्वारा सड़कों के किनारे टाइल आदि लगाने का काम करने वाले दिहाड़ीदार मज़दूरों के सात-आठ परिवार 'तेरा पंथ' के निकट पानी की टंकी वाले पार्क में डेरा डाले हुए हैं। दिन भर पुरुष व महिलायें आस-पास की सड़को पर मज़दूरी करते हैं और संध्याकाल अपने डेरे में बच्चों के पास लौट आते हैं।

दिनांक 11-12 की मध्य रात्रि को जब ये थके-हारे लोग गहरी नींद में सो रहे थे तो चोरों ने उनके सात मोबाइल व पांच लोगों की जेब से नकदी भी ले गये। मज़दूरों द्वारा दिये गये विवरण के अनुसार जगदीश के 600 रुपये, अंकेश के 1100, जाहर 1500, 4 बलराम 1740 रोशन 2500 रुपये चोर ले गये। लुटे-पिटे मज़दूरों का अनुमान है कि गहरी नींद के अलावा उन्हें कुछ सुंघाया भी गया होगा जिसके चलते वे बेसुध सोये रह गये। इन मज़दूरों के अनुसार चोर कोई बाहर से नहीं आया था, उन्हीं के डेरे में रहने वाले दो लड़को पर उनका संदेह है क्योंकि उनकी झुग्गी में से कुछ भी नहीं चुराया गया। इसके अलावा उन दोनों लड़कों का आपराधिक पुलिस रिकॉर्ड भी बताया जाता है।

लुटे-पिटे मज़दूरों की फरीयाद सुनकर, मुकदमा दर्ज कर कोई सार्थक कार्रवाई करने की बजाय उनकी दरखास्त तक की रसीद चौकी वालों ने देने की जरूरत नहीं समझी। और तो और रसीद मांगने पर पूरी बेशर्मी के साथ, महिलाओं की मौजूदगी में अशलील गालियां भी उन्हें दी गई। मौका मुआयना करने गये मान सिंह नामक एक पुलिसकर्मी ने तो उनकी झुग्गियों का मुआयना करते समय भी बिना किसी शर्म लिहाज के अश्लील गालियां बकी। जब एक ने विरोध किया तो उसे तुरंत एक थप्पड़ रसीद कर दिया। दरअसल गरीब एवं कमजोर होना ही इस देश में गुनाह है, वर्ना ऐसी कोई शिकायत किसी अमीर एवं दबंग की होती तो यही मान सिंह क्या, इसके बड़े-बड़े भी उसके सामने एड़ियां जोड़े खड़े होते।

शिकायतकर्ता मजदूर

इस चौकी का यह कोई इकलौता मामला नहीं है। शायद ही कोई दिन ऐसा गुजरता हो जब यहां इस तरह के कांड न होते हों। सेक्टर 10 की आरडब्लूए वालों ने बताया कि 19 सितम्बर को प्लॉट नम्बर डी 2-टू-125 में से दो लड़के करीब 60 किलो सरिया साइकिल पर लाद कर ले जाते हुए जब उन्होंने पकड़ कर 112 नम्बर पर फोन करके पुलिस को बुलाया तो भी कोई मुकदमा दर्ज नहीं किया गया।

चोरी व उठाइगिरी के अलावा इस सेक्टर में शराब का अवैध धंधा भी खुलेआम बेखौफ़ चलता है। सामुदायिक भवन के निकट बसी झुग्गियों में से किसी भी समय अवैध शराब की थैलियां प्राप्त की जा सकती है।

ग्राहकों का वहां मेला सा लगा रहता है। इनके विरुद्ध कार्रवाई के नाम पर, गाहे-बगाहे पुलिस वाले आबकारी अधिनियम के मुकदमें दर्ज कर अपने कर्त्तब्य की इतिश्री कर लेते हैं। यानी कि पर्चे भी दर्ज होते रहते हैं और उसी समय शराब भी बिक रही होती है। यही है पुलिस का खेल।

समझने वाली बात यह है कि उक्त पुलिस चौकी इस तरह का खेल खेलने के लिये पूर्णतया स्वतंत्र है क्या? इसके ऊपर बैठे एसएचओ, एसीपी, डीसीपी व सीपी तक के किसी भी अधिकारी को यह सब नजर क्यों नहीं आता? और तो और जनता द्वारा चुने गये विधायक नरेन्द्र गुप्ता, जिनका दफ्तर लगभग चौकी के सामने ही है, वे क्यों अपनी आंखें व कान बंद किये बैठे हैं?

सीवर समस्या बनाम नेताओं की ड्रामेबाजी

फ़रीदाबाद (म.मो.) नगरवासियों को नागरिक सुविधायें प्रदान करने के नाम पर हजारों करोड़ ठिकाने लगाने के बावजूद जनता सीवर, पेयजल, रात के अंधेरे में टूटी एवं खड्डेदार सड़कों की समस्याओं से जुझ रही है।

जवाहर कॉलोनी, पर्वतीया कालोनी, पंजाबी कॉलोनी व डबुआ जैसी सबसे घनी आबादी वाले इन समस्याओं से अत्यधिक परेशान हैं। पानी तो जैसे-तैसे खरीद कर पी लेते हैं, अंधेरी व गड्ढेदार सड़कों से भी बच-बचाकर निकल जाते हैं, लेकिन उस सीवर का सड़े पानी का क्या करें जो उनके घरों तक में घुसने को आतुर रहता है। इन तमाम मसलों को लेकर क्षेत्र के कांग्रेसी विधायक नीरज शर्मा लगातार आवाज बुलंद करते आ रहे हैं। सीवर के पानी में बैठ कर विरोध प्रदर्शन करने के साथ-साथ ग्रीवेंस कमेटी में भी मुद्दे को उठा चुके हैं। बीते शनिवार को हुई इस मीटिंग में मुख्यमंत्री खट्टर ने उनके इस अधिकार को भी छीन लिया।

क्षेत्रीय जनता की इन समस्याओं पर राजनीति करने में भला 'आप' जिला अध्यक्ष धर्मबीर भड़ाना क्यों पीछे रहने लगे? विधायक नीरज शर्मा ने तो सीवर के पानी में बैठ कर विरोध प्रदर्शन किया था तो भड़ाना ने उसी पानी में स्नान करके प्रदर्शन कर दिया। इन दोनों का जवाब देने के लिये कोई नेता इस पानी में खाना न पकाने लग जाये। अपने विरोध प्रदर्शन के दौरान भड़ाना ने नीरज के विरोध प्रदर्शन को पाखंड बताते हुए पूरी समस्या के लिये उन्हें ही दोषी ठहरा दिया। लगता है कि नेताओं को जनता की समस्याओं में कम और अपने राजनीति चमकाने में अधिक रूचि है। दूसरी ओर सरकार इन नेताओं की क्षमता एवं हकीकत से अच्छी तरह वाकिफ है। वह इन्हें टिच भी नहीं समझती है। यदि इन नेताओं के पास जन-बल होता तो इन नेताओं के सामने सरकार कभी की झुक गयी होती और समस्या का समाधान हो गया होता। यदि इन नेताओं में दम होता और जनता का पूरा समर्थन होता तो खट्टर की क्या मजाल जो इनकी सुनवाई न करे। जनता की ताकत का तल्ख स्वाद, खट्टर जी घरोंडा व हिसार आदि क्षेत्रों में अच्छी तरह चख चुके हैं। उन्हें पूरा विश्वास है कि फरीदाबाद की जनता उन्हें वैसा स्वाद नहीं चखायेगी। इसलिये उक्त विरोध प्रदर्शनों का कोई संज्ञान लेने की अपेक्षा वे इन्हें मनोरंजन की तरह ले रहे हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया।